[This question paper contains 4 printed pages.]

462 *आपका अनुक्रमांक* _____

B.A. (Programme) / I **B**

(T)

HINDI DISCIPLINE – Paper I

(हिन्दी अनुशासन)

(हिन्दी कविता, नाटक तथा हिन्दी कविता का प्रवृत्तिगत इतिहास)

(प्रवेश वर्ष 2004/2006 और तत्पश्चात् - नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए/NCWEB के विद्यार्थियों के लिये)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 75*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

टिप्पणी :- प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों (श्रेणी 'A') के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक NCWEB के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे।

1. किन्हीं दो अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) चकई बिछुरी रैनि की, आइ मिली परभाति।
जे जन बिछुरे राम सूँ, ते दिन मिले न राति ॥

× × × ×

बिरहा बुरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान।
जिहि घटि बिरह न संचरै, सो घट सदा मसान ॥

P.T.O.

(ख) सोभित कर नवनीत लिए।

घुटुरुनि चलन रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए।।

चारू कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिए।

लट लटकीन मनु मत्त मधुप गन मादक मधुहि पिए।।

कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत रूचिर हिए।

धन्य सूर एको पल इहिं सुख का सत कल्प जिए।।

(ग) अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है,

न्यायार्थ अपने बंधु को भी, दंड देना धर्म है।

इस तत्त्व पर ही कौरवों से पांडवों का रण हुआ,

जो भव्य भारतवर्ष के कल्पांत का कारण हुआ। (8+8)

2. कबीर अथवा नागार्जुन का साहित्यिक परिचय लिखिए। (7)

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित काव्यांशों के आधार पर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) सूरदास के वात्सल्य भाव के पदों का प्रतिपाद्य बताइए।

(ii) तुलसीदास के अपने आराध्य के प्रति प्रस्तुत किए गए विनय के पदों का प्रतिपाद्य लिखिए।

(iii) 'मधुप गुनगुनाकर कह जाता' कविता की मूल संवेदना बताइए।

(iv) 'चंद्र गहना से लौटती बेर' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए। (6+6)

4. किसी एक अनुच्छेद की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

राजनीति साहित्य नहीं है। उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाएँ, तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।... साहित्य उनके जीवन का पहला चरण था। अब वे दूसरे चरण में पहुँच चुके हैं। मेरा अधिक समय इसी आयास में बीतता है कि उनका बढ़ा हुआ चरण पीछे न हट जाए।

अथवा

मैं यहाँ से क्यों नहीं जाना चाहता था? एक कारण यह भी था कि मुझे अपने पर विश्वास नहीं था। मैं नहीं जानता था कि अभाव और भर्त्सना का जीवन व्यतीत करने के बाद प्रतिष्ठा और सम्मान के वातावरण में जाकर मैं कैसा अनुभव करूँगा। मन में कहीं यह आशंका थी कि वह वातावरण मुझे छा लेगा और मेरे जीवन की दिशा बदल देगा..... और यह आशंका निराधार नहीं थी। (8)

5. नाटकीय तत्त्वों के आधार पर 'आषाढ़ का एक दिन' का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

अथवा

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के आधार पर कालिदास का चरित्र चित्रण कीजिए। (12)

P.T.O.

6. (क) आदिकाल अथवा रामभक्ति काव्यधारा की विशेषताएँ बताइए। (10)

(ख) छायावाद अथवा नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ बताइए। (10)